

पुस्तकालय



बाल-मित्र ज्ञान-विज्ञान माला

११

पुस्तकालय

सन्तराम वत्स्य



मूल्य : एक रुपया पचास पैसे
प्रथम संस्करण, १९७०

०

चित्रकार
प्रधानत सेन

०

प्रकाशक
मेधांतल पब्लिशिंग हाउस
२३, दरियाबाग, दिल्ली-६

मुद्रक : राज कम्पोजिंग एजेन्सी द्वारा
सरस्वती प्रिंटिंग प्रेस, दिल्ली-२२



पुस्तकालय का अर्थ है :

पुस्तकों का घर ।

अंग्रेज़ी में पुस्तकालय को लायब्रेरी कहते हैं ।

पुस्तकालय लोगों को पढ़ने के लिए पुस्तकें देते हैं

और फिर वापस ले लेते हैं ।

पुस्तकालय कई तरह के होते हैं :

सार्वजनिक पुस्तकालय,
महाविद्यालय पुस्तकालय,
पाठशाला पुस्तकालय,
और निजी पुस्तकालय ।

सार्वजनिक पुस्तकालय का सदस्य सभी बन सकते हैं
परन्तु महाविद्यालय का पुस्तकालय

और पाठशाला का पुस्तकालय
केवल अपने-अपने छात्रों

और अध्यापकों के लिए होता है ।

निजी पुस्तकालय केवल अपने लिए होता है ।

कभी-कभी मित्र और पड़ोसी
भी इससे लाभ उठा लेते हैं ।





पुस्तकालय में जाते समय कुछ बातों का सदा ध्यान रखो। पुस्तकालयों में बातें विल्कुल नहीं करनी चाहिए। पुस्तकालयों में कुछ पुस्तकें ऐसी भी होती हैं, जिन्हें कोई बाहर नहीं ले जा सकता। वे लोग जो पुस्तकालय के सदस्य नहीं होते हैं, पुस्तकें घर नहीं ले जा सकते। इसलिए पुस्तकालय में ही बैठकर पढ़ते हैं। इसी तरह कुछ पुस्तकालयों में वाचनालय भी होते हैं। पुस्तकालय और वाचनालय का अन्तर समझ लो। पुस्तकालय में पुस्तकें होती हैं।

वाचनालय में पत्र और पत्रिकाएं।

पत्रिकाएं घर ले जाने के लिए नहीं होतीं।

वहीं बैठकर पढ़ी जाती हैं।

वाचनालय में हर कोई जा सकता है

और वहाँ बैठकर पढ़ सकता है।



घर बैठे दूर देशों की यात्रा जैसा आनन्द
पुस्तकों के द्वारा मिल जाता है ।
यों समझ लो कि पुस्तकें
मानव जाति के सारे ज्ञान का भण्डार हैं ।
पढ़ कर तुम इस ज्ञान को अपना बना सकते हो ।
पर अपना बनाने के लिए पढ़ने मात्र से
काम नहीं चलेगा ।
इस ज्ञान को, अपने कामों में, अपने आचरण में
प्रकट करना होगा, करके दिखाना होगा ।
ज्ञान की सफलता उसे अपने कार्यों द्वारा
प्रकट करने में ही है ।

काउन्टर

प्रवेश

अपने पास कुछ सामान हो तो पुस्तकालय के भीतर जाने से पहले उसे बाहर बने खानों में रख देना चाहिए। पुस्तकालय में थैला आदि ले जाना मना है, क्योंकि कुछ बुरे लोग वहाँ से पुस्तकें चुरा लाते हैं। पुस्तकालय में यदि पुस्तकों के बारे में कोई बात पूछनी हो तो पुस्तकालय के अध्यक्ष या उन के सहायक से बिना संकोच से पूछ लेनी चाहिए। वे आपकी हर तरह से सहायता करेंगे और जिस बात को समझना चाहो, समझाएँगे।



कक्षा की पुस्तकों की तरह ही पुस्तकालय से लाई हुई पुस्तकों को पढ़ने का समय और स्थान निश्चित कर लेना चाहिये। बैठने की जगह साफ, और शान्त होनी चाहिए। वहां प्रकाश का भी अच्छा प्रवन्ध होना आवश्यक है। अपने अध्ययन



का लेखा रखने के लिए एक कापी लगा लो।

प्रत्येक पढ़ी गई पुस्तक का विवरण संक्षेप में लिख लेना चाहिए।

पुस्तक का नाम, पृष्ठ संख्या और विषय तथा यह कि कितने दिनों में पढ़ी, और कैसी लगी? यदि पुस्तक में लिखी कोई बात बड़ी महत्वपूर्ण लगी हो तो उसे कापी में उतार लेना चाहिए या अपने शब्दों में लिख लेना चाहिए।

जैसे भोजन में हम ध्यान रखते हैं कि वह शुद्ध, स्वास्थ्यवर्द्धक और स्वादिष्ट हो, वैसे ही मस्तिष्क को दिया जाने वाला ज्ञान का भोजन भी विचार-शक्ति को बढ़ाने वाला होना चाहिए। अच्छा साहित्य भोजन के साथ-साथ औषध का काम भी करता है। जैसे रोगी को, कई वार कड़वी औषध दी जाती है जिससे उसका रोग दूर हो जाता है ; उसी प्रकार अपने दुर्गुणों को दूर करने के लिए विचार-प्रधान साहित्य को पढ़ना चाहिये।



जैसे खट्टा, चर्परा, मिर्च-मसाले वाला भोजन खाते समय तो कुछ लोगों को अच्छा लगता है किन्तु उससे तरह-तरह के रोग पैदा होते हैं, वैसे ही घटिया पुस्तकें पढ़ने से भी मन और बुद्धि में बुरे विचार पैदा होते हैं। इसीलिए पाठशाला-पुस्तकालयों में घटिया पुस्तकें नहीं रखी जाती।



पाठशाला-पुस्तकालय में, पुस्तकों के साथ-साथ छात्रों के लिए उपयोगी पत्र-पत्रिकाएँ भी रखी जाती हैं। पुस्तकों को चुनते समय भी बालकों की अवस्था, योग्यता और रुचि का ध्यान रखा जाता है। कहानियाँ, नाटक, कविता और उपन्यास, जीवन-चरित, इतिहास, भूगोल और विज्ञान, धर्म, राजनीति, विश्वकोश और पत्रिकाएँ वहाँ सभी कुछ पढ़ने को मिल जाता है।





पुस्तकालय में जितनी भी पुस्तकें होती हैं
उन सब की सूचियां
विषयानुसार वहाँ रखी रहती हैं।
ये सूचियां दो प्रकार की बनाई जाती हैं :
एक—पुस्तकों के नाम के अकारादि क्रम से
और दूसरी लेखकों के नाम के अकारादि क्रम से।
इससे मनचाहे विषय की पुस्तक
या मनचाहे लेखक की पुस्तक
या मनचाही पुस्तक खोजने में बड़ी सुविधा होती है।

पुस्तकें पढ़ना समय का सबसे अच्छा उपयोग है ।
ये ज्ञान बढ़ाती हैं, मनोरंजन करती हैं,
और साथ ही पाठ्य पुस्तकों को
समझने में भी सहायता पहुंचाती हैं ।
इस तरह परीक्षा में अधिक अंक दिलवाती हैं ।
समय को बेकार की गप-शप में गंवाने से बचाती हैं ।



सच तो यह है कि
तुम्हें कक्षा में जो पुस्तकें
पढ़ाई जाती हैं,
उनका एक उद्देश्य
यह भी होता है
कि तुम अपने आप
पुस्तकों को पढ़ने और
समझने के योग्य हो जाओ।
जब तुम पढ़-लिखकर कोई
काम करने लगोगे तब भी तुम्हें
अपने काम-काज सम्बन्धी
ज्ञान को पढ़ाने के लिए
अनेक पुस्तकें पढ़नी पड़ेंगी।
इसलिए अभी से पढ़ने में अपनी रुचि को बढ़ाओ
और पुस्तकों में संचित ज्ञान को अपना बनाओ।



बालकों की उमर के साथ-साथ कद भी बढ़ता है ।
यदि कोई तेरह साल का बालक कद में
छः साल के बच्चे जितना हो तो
उसे हम कद से बौना कहेंगे ।
इसी तरह जिस तेरह साल के बालक का मस्तिष्क
छोटे बच्चों जैसा हो
उसे भी दिमाग से बौना कहेंगे ।
कुछ लोग कद से बौने होते हैं,
कुछ मस्तिष्क से ।
दोनों ही तरह के बौनों की
लोग हँसी उड़ाते हैं ।



जैसे अच्छा भोजन न मिलने से
शरीर दुर्बल और अस्वस्थ हो जाता है,
वैसे ही बुद्धि भी अच्छा, ज्ञान-वर्द्धक साहित्य
न मिलने से दुर्बल हो जाती है।
अविकसित रह जाती है।
बुद्धिहीन लोग बुद्धू कहलाते हैं।





हम जो भी कार्य करते हैं,
उनके मूल में विचार ही होते हैं ।
हम जो कुछ भी बोलते या लिखते हैं,
वे भी हमारे विचार ही हैं ।
जो व्यक्ति अपने विचारों को
स्पष्ट और प्रभावशाली ढंग से
प्रकट कर सकता है,
वही समाज का अगुआ—नेता बनता है ।
संसार भर के श्रेष्ठ विचार पुस्तकों में संगृहीत हैं ।
पढ़कर हम उन्हें अपना बना सकते हैं ।



पुस्तकालय से तुम जो भी पुस्तक लाओ
उसे बहुत संभालकर रखो।

उस पर न तो अपना नाम लिखो
और न ही पेंसिल से निशान लगाओ।
पुस्तक के चित्रों, और मानचित्रों को
भूलकर भी फाड़ो मत।

पुस्तक की जिल्द को तोड़ो-मरोड़ो मत।

पुस्तक को मोड़कर, दोहरा करके मत पढ़ो।



तुम जो पुस्तक पुस्तकालय से
या अपने किसी मित्र से
पढ़ने के लिए लाए हो,
उसे किसी दूसरे मित्र को
पढ़ने के लिए मत दो।
उधार ली हुई चीज़ को
दूसरों को उधार मत दो।
इस तरह पुस्तकें खो जाती हैं
या खराब हो जाती हैं।



पुस्तकालय से पुस्तक
जितने दिनों के लिए मिली हो,
उससे अधिक दिन अपने पास मत रखो ।
समय पर लौटा दो ।
इससे दो लाभ होंगे :
ठीक समय पर लौटाने के लिए
पुस्तक को उससे पहले समाप्त कर लेना होगा
और एक को लौटाकर दूसरी नई पुस्तक
पुस्तकालय से पढ़ने के लिए मिल जाएगी ।

यों ही जिस किसी पुस्तक को पुस्तकालय से पढ़ने के लिए मत ले आओ।

सोच-समझकर, पुस्तकों की सूची को देखकर, मनोरंजन करने के साथ-साथ ज्ञान को बढ़ाने वाली पुस्तक पढ़ने के लिए चुनो।

तुम्हारी कक्षा में जो विषय पढ़ाए जाते हैं: जैसे विज्ञान या सामाजिक विज्ञान आदि उनके बारे में तुम्हें कुछ अधिक बताने वाली कोई भी पुस्तक तुम्हारे लिए उपयोगी हो सकती है। महापुरुषों, वैज्ञानिकों और देश-भक्तों की जीवनियां, अपने को सुधारने और चरित्र का निर्माण करने वाली पुस्तकें बहुत उपयोगी हो सकती हैं।



कुछ लड़के-लड़कियां

केवल उपन्यास और कहानियां ही पढ़ते हैं।

यह कोई बहुत अच्छी बात नहीं है।

इन के साथ-साथ ज्ञान-विज्ञान की पुस्तकें भी पढ़ते रहना चाहिये।

केवल समय काटने लिए पढ़ी गई पुस्तकें ज्यादा उपयोगी नहीं होतीं।

किसी अच्छी पुस्तक की पहचान यह है

कि वह पढ़ने वाले को अच्छा बनने के लिए :

अच्छे-अच्छे काम करने के लिए, तैयार करती है।

अधिक परिश्रम करना और दूसरों की सेवा करना सिखाती है।



जब भी कोई पुस्तक पढ़ो
तो उस में लिखी बातों पर विचार करो।
उन्हें अच्छी तरह समझने का प्रयत्न करो।
जो बात समझ न आए, उसे किसीसे पूछ लो।
बिना सोचे-समझे बहुत कुछ पढ़ लेने से
सोच-समझकर पढ़ा हुआ,
थोड़ा भी लाभदायक होता है।
प्रतिदिन थोड़ा-थोड़ा भी पढ़ते रहोगे
तो वर्ष भर में बहुत पढ़ लोगे।
प्रतिदिन कुछ न कुछ पढ़ने की आदत बना लो।
इससे तुम्हें अनेक लाभ होंगे।



सारे संसार ने अब तक जितनी भी बातें जानी हैं,
वैज्ञानिकों ने जितनी भी खोजें और आविष्कार किए हैं,
उन सब का हाल तुम्हें पुस्तकों में मिल जाएगा।

आज से सैकड़ों वर्ष पहले की बातें
और जहां तुम रहते हो
वहाँ से हजारों मील दूर की बातें
तुम घर बैठे पुस्तकों के द्वारा
जान सकते हो।

दूसरे देश और उनके निवासी कैसे हैं,
समुद्र के भीतर कैसे जीव-जन्तु
रहते हैं, अफ्रीका के जंगलों
में कैसे-कैसे जानवर रहते हैं,
उत्तरी ध्रुव के वासी एस्किमो
वर्फ के घरों में कैसे रहते हैं?
ये और इस तरह की कितनी ही
बातें पुस्तकों के द्वारा
जानी जा सकती हैं।



सार्वजनिक पुस्तकालय
राज्य सरकारें, नगरपालिकाएँ,
पंचायतें और समाज-सेवी संस्थाएँ
चलाती हैं।

विद्यालयों के पुस्तकालय
विश्वविद्यालय और शिक्षा विभाग
द्वारा चलाए जाते हैं।

निजी पुस्तकालय अपने पैसों से
अपने घर में बनाये जाते हैं।





सार्वजनिक पुस्तकालयों की सदस्यता के नियम एक जैसे नहीं होते। कहीं-कहीं सदस्यों से वार्षिक शुल्क लिया जाता है, साथ ही नकद जमानत भी।

जमानत की राशि सदस्यता छोड़ने पर वापस मिल जाती है। कई पुस्तकालयों में शुल्क नहीं लिया जाता, केवल नकद जमानत ली जाती है।

जमानत इसलिए लेते हैं कि यदि सदस्य पुस्तक न लौटाए या खराब कर दे तो पुस्तक का मूल्य जमानत की राशि में से काट लिया जाए।

कई पुस्तकालयों में नकद जमानत न लेकर किसी उच्च सरकारी अधिकारी या निर्वाचित जन-प्रतिनिधि की लिखित जमानत से ही काम चल जाता है।

छात्रों की सुविधा के लिए :
उनके समय और पैसों की बचत के लिए
विद्यालय में ही पुस्तकालय होता है ।
इससे पुस्तकें लेकर पढ़ना
छात्रों के लिए सबसे आसान है ।
यहाँ न जमानत देनी पड़ती है
और न वार्षिक शुल्क ।





पुस्तकें ज्ञान प्राप्त करने
और मनोरंजन का सबसे अच्छा साधन हैं ।
जैसे शरीर के लिए भोजन आवश्यक है,
वैसे ही मस्तिष्क के लिए भी
ज्ञान रूपी भोजन आवश्यक है ।
मनुष्य जाति का सारा ज्ञान
पुस्तकों में संचित है ।
पढ़कर हम उसे अपना बना सकते हैं ।

यह इसलिए भी आवश्यक है
कि यह पुस्तक आपकी नहीं है ।
यदि कम समय में अधिक पढ़ना चाहते हो
तो बोलकर मत पढ़ो । मौन पठन का अभ्यास करो ।
एक-एक शब्द को मत पढ़ो, पूरे वाक्यांश को पढ़ो ।
जो बात समझ में न आए उसे दोबारा पढ़ो ।
जब एक पाठ या एक अध्याय पूरा हो जाए
तो उसमें पढ़ी बातों पर विचार करो ।
उसका निचोड़ अपने दिमाग में बिठा लो ।
अपने पढ़ने की गति को बढ़ाओ,
कभी-कभी घड़ी देखकर
पता लगाओ कि एक घंटे
में कितना पढ़ लेते हो ।





पढ़ते समय इस बात का ध्यान रखो
कि तुम अपना ज्ञान बढ़ाने के लिए पढ़ रहे हो।
तुम जो कुछ पढ़ रहे हो
उससे तुम्हारी योग्यता और शब्द-भण्डार बढ़ रहा है,
विचारों को समझने और परखने की समझ बढ़ रही है।
ज्यों-ज्यों तुम बड़े होते जा रहे हो
शरीर के साथ-साथ तुम्हारी समझ भी बढ़ रही है।
कक्षा की पुस्तकों को समझने में भी तुम दूसरों से आगे हो।
पढ़ते रहो और आगे बढ़ते रहो।

पर हर समय पढ़ते ही मत रहो, खेलो-कूदो भी।

निरे किताबी कीड़े मत बनो।

पहले विद्यालय का काम पूरा करो।

फिर कुछ खेलो-कूदो।

शेष समय को इधर-उधर घूमने,

बेकार की बातें करने में मत खर्च करो।

अपनी एक दिनचर्या बना लो।

प्रातः जगने से लेकर रात को सोने तक का समय
किस तरह खर्च करना है, उसकी योजना बना लो।

परिश्रम से सफलता मिलती है।

आलसी मत बनो।

तुम्हें जल्दी ही पता लग जाएगा,

तुम्हारे पास बहुत समय है।

तुम उस का सदुपयोग करके

उन्नति कर रहे हो,

अपने आलसी साथियों से

आगे बढ़ रहे हो।



१. पुस्तकों को सिर के नीचे रखकर मत सो जाओ, वे सिरहाना नहीं हैं।
२. पुस्तकों को फेंको मत, वे गेंद नहीं हैं।
३. पुस्तकों को झलकर हवा मत करो, वे पंखा नहीं हैं।
४. पुस्तकों से चीजों को मत ढको, वे ढक्कन नहीं हैं।
५. पुस्तकों से वर्षा का बचाव मत करो, वे छाता नहीं हैं।

